अजायब बानी

मासिक पत्रिका
अप्रल–2023

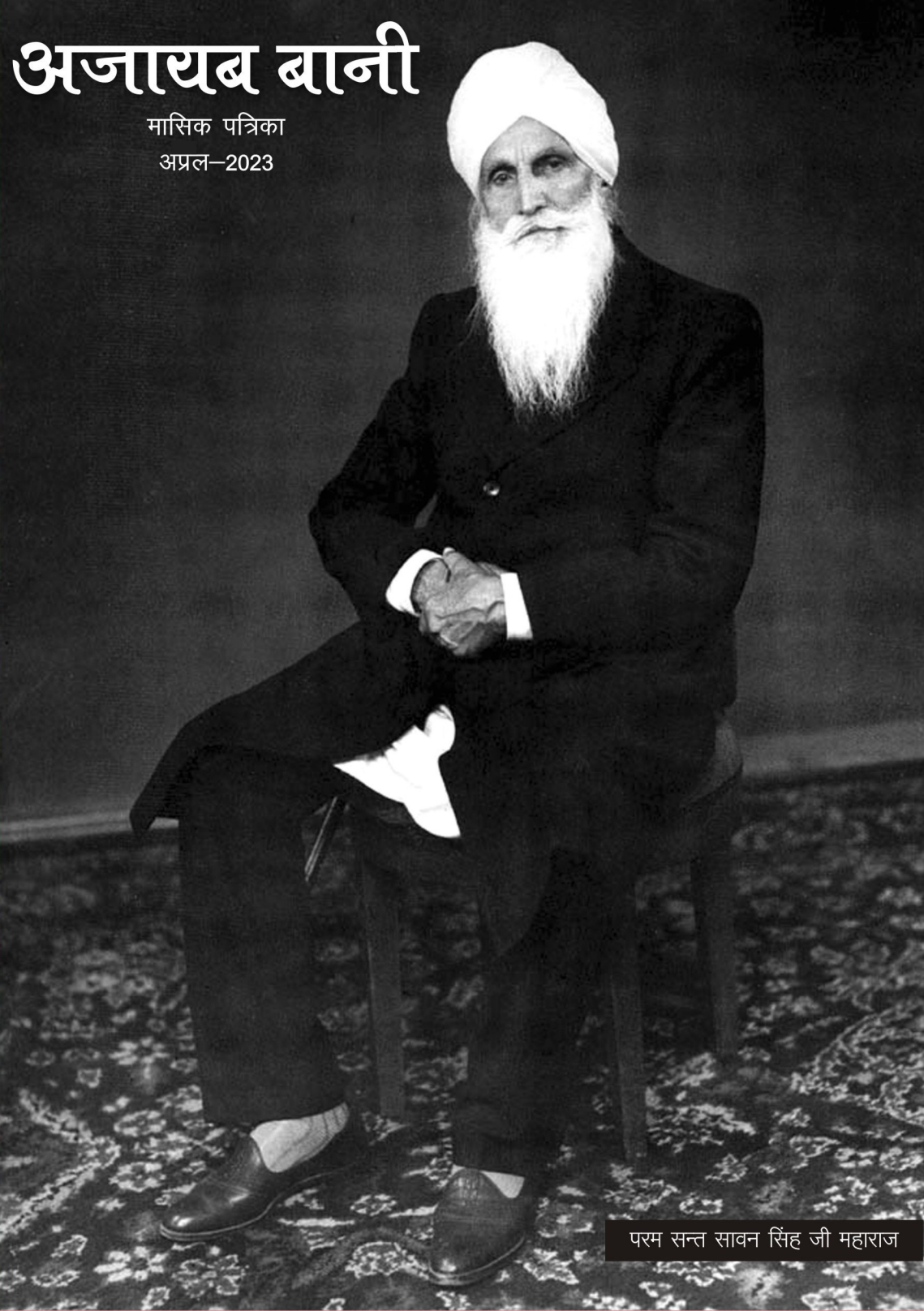

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां	अंक–बारहवां	अप्रैल–2023

2 **सावन प्यारे बक्शनहारे**

3 (महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से)
सच्ची सन्त

7 सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
गुरु का प्यार
(गुरु अर्जुन देव जी की बानी)

19 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल–जवाब

29 बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा एक श्रद्धालु सतसंगन को पत्र
अपने मन पर विजय प्राप्त करें

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **सुखपाल नौरिया व डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 253 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सावन प्यारे बक्शन हारे

सावन प्यारे बक्शन हारे, दुखियां दे दर्द निवार दयो, x 2

1 रूहां सड़दियां तपदियां साडियां x 2
अमृत प्याके ठार दयो x 2
सावन प्यारे.....

2 असीं भुल्ल गए तेरे नाम नूं x 2
साडी बिगड़ी नूं आ के सवार दयो x 2
सावन प्यारे.....

3 बेड़ा सागर विच ठिल गया x 2
बनो मल्लाह ते तार दयो x 2
सावन प्यारे.....

4 दया करो नाम जपा लवो x 2
साडी होमैं हंगता नूं मार दयो x 2
सावन प्यारे.....

5 हथ बन अरजां हैं मेरियां x 2
गरीब 'अजायब' दी सार लयो x 2
सावन प्यारे.....

सच्ची सन्त

महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से

राबिया बसरी एक महान सन्त थी, वह जवानी में बहुत खूबसूरत लड़की थी। उसकी सुंदरता की वजह से चोरों ने उसका अपहरण करके उसे वेश्या के घर के मालिक को बेच दिया। उस घर के लोगों ने राबिया बसरी से वही काम करवाने की अपेक्षा की जो वहाँ पर रह रही दूसरी औरतें कर रही थी।

उस वातारण में पहली रात एक पुरुष को राबिया बसरी के कमरे में भेजा गया तो राबिया बसरी ने उस पुरुष से कहा, ''आप जैसे सुंदर युवक को देखकर खुशी हुई। आप आराम से कुर्सी पर बैठें अगर आपकी इजाजत हो तो हम मिलकर कुछ समय के लिए परमात्मा से प्रार्थना कर सकते हैं।'' वह युवक यह सब देखकर हैरान हुआ फिर राबिया बसरी के पास बैठ गया और दोनों ने मिलकर परमात्मा के आगे प्रार्थना की।

राबिया बसरी ने उस युवक से कहा, ''अगर आपको ऐतराज न हो तो मैं आपको याद दिलाना चाहती हूँ कि एक दिन आपने मर जाना है, आपके मन में जो पाप है यह पाप आपको नर्क की अग्नि में ले जाएगा। आप यह सोच लें कि आप यह पाप करके नर्क की अग्नि में कूदना चाहते हैं या इस दुष्कर्म से बचना चाहते हैं?''

उस युवक ने बहुत हैरान होकर कहा, ''आप एक बहुत अच्छी और धार्मिक औरत हैं आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं आज से आपको अपना गुरु मानता हूँ और आपके साथ वायदा करता हूँ कि मैं कभी भी इस तरह के दुष्कर्म के लिए किसी ऐसे घर नहीं जाऊँगा।'' जैसे-जैसे दिन बीतते गए अनेकों पुरुषों को राबिया बसरी के कमरे में भेजा गया। राबिया बसरी

ने सबको उसी तरह बदल दिया जैसे उसने पहले पुरुष को बदला था। उस घर का मालिक यह सोचने पर मजबूर हो गया कि यह सब कैसे हो रहा है कि जो पुरुष इस लड़की के पास जाता है वह फिर वापिस नहीं आता। यह लड़की बहुत सुंदर है, पुरुषों को इसकी तरफ ऐसे मंडराना चाहिए जैसे ज्योति पर पतंगे मंडराते हैं।

इस रहस्य को जानने के लिए एक रात उस घर का मालिक और उसकी पत्नी ऐसी जगह छिप गए जहाँ से राबिया बसरी के कमरे पर नजर रखी जा सके और यह जाना जा सके कि राबिया बसरी अपने पास आने वाले पुरुषों के साथ किस तरह का व्यवहार करती है।

जैसे ही एक पुरुष राबिया बसरी के कमरे में दाखिल हुआ तो राबिया ने उससे कहा, ''नमस्कार मित्र! यहाँ आपका स्वागत है, इस अपवित्र घर में मैं सदा सर्वशक्तिमान परमात्मा को याद रखती हूँ, क्या आप इस बात से सहमत हैं?'' उस पुरुष को राबिया की यह बात माननी पड़ी और उस पुरुष ने चिड़ते हुए कहा, ''हाँ! हमें पुरोहितों ने यह सब बताया है।''

राबिया बसरी ने कहा, ''यहाँ हर तरफ बुराई है लेकिन मैं कभी यह नहीं भूलती कि परमात्मा यहाँ होने वाली बुराइयों को देख रहा है और न्याय भी कर रहा है। इस घर में जितने भी लोग कुछ समय की खुशी प्राप्त करने के लिए आते हैं, उन्हें नर्क की यातनाओं से गुजरना पड़ेगा अगर आप भी चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। हे मित्र! हमें यह इंसानी जामा भजन–सिमरन करके परमात्मा को पहचानने के लिए मिला है लेकिन हम जानवरों वाली हरकतें करके इस कीमती जामें को खराब कर रहे हैं।''

उस पुरुष ने भी दूसरे पुरुषों की तरह राबिया बसरी के वचनों को सच्चाई समझा। वह पुरुष अपने मन के अंदर के पापों को जानते हुए राबिया बसरी के चरणों में गिर पड़ा और रोते–गिड़गिड़ाते हुए उससे क्षमा याचना करने लगा। राबिया बसरी के ऐसे स्पष्ट वचनों को सुनकर घर के

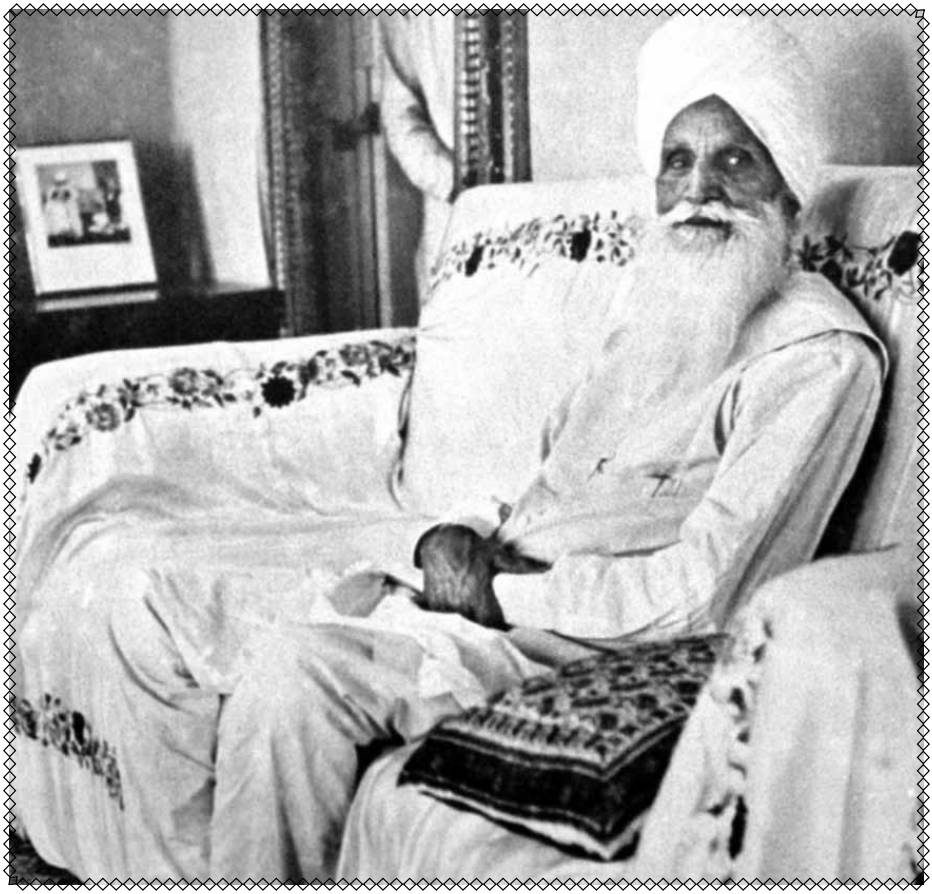

मालिक और उसकी पत्नी छिपे हुए स्थान से बाहर आ गए और अपने अनगिनत पापों के लिए रोने लगे।

घर के मालिक और उसकी पत्नी ने राबिया बसरी के चरणों में गिरकर कहा, ''तुम एक धार्मिक और पवित्र लड़की हो, हमने तुम्हारे लिए बुरा सोचा था लेकिन तुम एक **सच्ची सन्त** हो। तुम यह अपवित्र घर छोड़कर यहाँ से चली जाओ। जहाँ तक हमारा सवाल है हम यह समझ गए हैं कि हमने बहुत बुरा काम किया है लेकिन अब हमारी आँखें खुल गई हैं। परमात्मा हमारी जिंदगी बदल देगा।'' ***

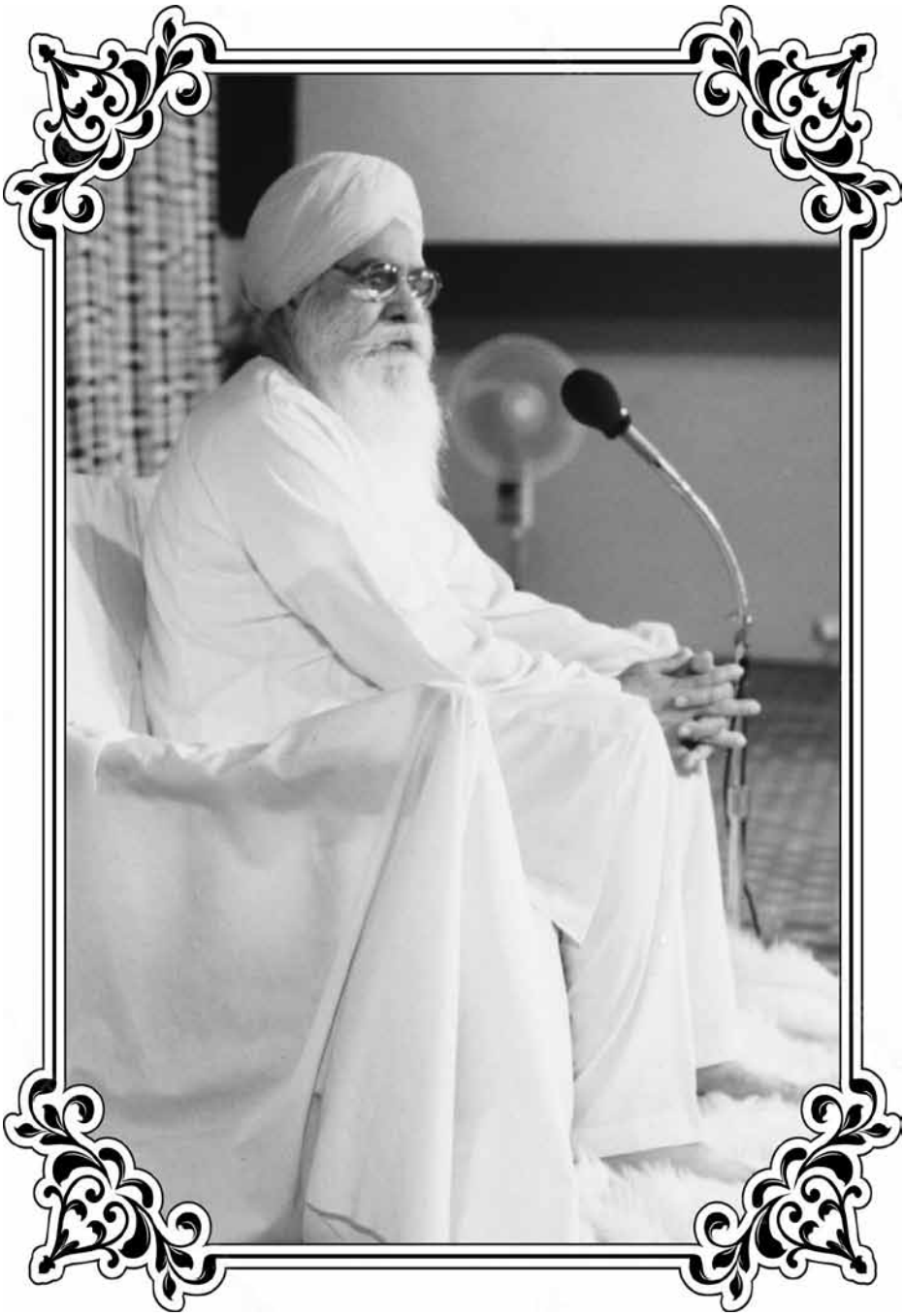

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु का प्यार

DVD 566 (3)

7 जनवरी 1994, मुम्बई

गुरु अर्जुन देव जी की बानी

मैं परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने बहुत दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। हम जुबान से किसी तरह भी उनका यश नहीं कर सकते। वह सर्वव्यापक है, हमारी मौत और पैदाईश उनके हाथ में है, वह करण–कारण समर्थ है, हमारी आत्मा का स्वामी है। हम किस तरह उनका धन्यवाद कर सकते हैं?

इसी तरह अगर कोई गुलाम अपने बादशाह की तारीफ करना चाहे तो वह ज्यादा से ज्यादा उसे अच्छा ही कह देगा लेकिन बादशाह खुशी में आकर अपने गुलाम पर बख्शिश करके उसे अपने जैसा ही बना लेता है। गुलाम, ताकतवर बादशाह की बख्शिश का अंदाजा कैसे लगा सकता है? कुलमालिक जब अपने सेवक पर अपना आप जाहिर करता है तो उसका क्या अंदाजा लगाया जा सकता है, ज्यादा से ज्यादा उसे अच्छा और आत्मा को शान्ति देने वाला ही कह सकता है।

आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गुरु अर्जुनदेव जी के सारे शब्द **गुरु के प्यार** में भीगे हुए हैं। उनका अपने गुरु के साथ जितना प्यार और लगाव था वह ब्यान में नहीं आ सकता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरु गोपाल गुरु गोविन्दा, गुरु दयाल सदा बखसिंदा

गुरु और गोविन्द में कोई फर्क नहीं, गुरु ही हमारा वेद–शास्त्र है। वह सदा ही दया करता है, परमात्मा बख्शने के लिए गुरु के रूप में देह धारण करके संसार में आता है। गुरु साहब कहते हैंः

गोबिंद गोबिंद कहै दिन राती गोबिंद गुण सबद सुणावणिआ।

गोबिंद–गोबिंद कहकर हम उसकी तारीफ नहीं कर सकते लेकिन अंदर उसके शब्द को सुनना है। सच्चखंड जहाँ से 'शब्द' आ रहा है वहाँ तक आत्मा को पहुँचाना ही उसकी सच्ची बड़ाई है। गुरु साहब कहते हैंः

तू सुल्तान कहा हो मीआ, तेरी कवन वडाई

अगर हम तुझे बादशाहों का बादशाह कह दें, सुल्तान या मियाँ कह दें या उससे ऊँचा कोई लफ्ज बोल दें, चाहे परमात्मा भी कह दें ये सभी दुनियावी लफ्ज हैं। इनसे तेरी क्या बड़ाई हो सकती है। सेवक अंदर उससे मिलकर ही सच्ची बड़ाई कर सकता है।

प्यारेयो, पच्चीस साल उस महान हस्ती ने होका दिया। वह ताकत धुर से देने के लिए ही आती है लेकिन अब सवाल तो हमारा है कि हम क्या माँगते हैं? हम दुनियादारों को माँगना भी नहीं आता। कोई बड़े दिलवाला जिसके ऊपर परमात्मा अपनी खास बख्शीश करे, वही माँग सकता है लेकिन हम क्या माँगते हैं, कोई कहता है, ''मेरी बीमारी दूर हो जाए।'' कोई कहता है, ''मेरी बेरोजगारी दूर हो जाए।'' कोई मान–बड़ाई के लिए अरदासें करता है। दुनिया की मान–बड़ाई की खातिर हम दिन–रात तड़पते फिरते हैं। कोई पत्नी के लिए अरदासें करता है, कोई पत्नी, पति के लिए अरदासें करती है लेकिन जो चीज माँगने वाली है जिससे संतोष आएगा वह है नाम और **गुरु का प्यार**।

मैं सारे विश्व में उस महान हस्ती गुरुदेव के बारे में यही बताता रहा हूँ और अब भी बता रहा हूँ कि जब मेरी उनके साथ पहली मुलाकात हुई थी तो मैंने यही कहा था, ''मेरा दिल–दिमाग बचपन से खाली है, मुझे पता नहीं कि मैंने आपसे क्या माँगना है या क्या कहना है?'' सच्चे पातशाह ने हँसकर कहा, ''मैं खाली जगह देखकर ही तेरे पास आया हूँ, मेरे आस–पास बहुत दिमागी पहलवान हैं।''

मैंने अपनी जिंदगी में अपने गुरुदेव से कोई दुनियावी सवाल नहीं किया। कोई दूध माँगता है, कोई बेटा माँगता है मैंने तो सिर्फ आपको ही माँगा है। यह उनकी ही दया थी कि वह मुझे घर आकर मिले। ऐसा नहीं कि मैंने कुछ माँगा नहीं और उन्होंने मुझे कुछ दिया नहीं। ऐसे शिष्य के अंदर वह प्रभु परमात्मा गुरुदेव अपनी सब बरकतें लेकर बैठ जाता है। वह अंदर से ही रहनुमाई करता है अगर कोई विपता बनती है तो वह उसे अंदर से ही सहारा देता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

माँगना माँगना हरि यश गुरु से माँगना

गुरु से माँगने वाली चीज गुरु की महिमा, **गुरु का प्यार** है कि वह हमें अपनी याद बख्श दे। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। इसमें गुरु अर्जुनदेव जी महाराज बताते हैं कि परमात्मा जब हमारे ऊपर दया रहमत करता है तो हमें इंसान के जामें में लाता है, इंसान का जामा बड़ी कीमती दात है। यह जामा खास तोहफा है जो काम हम पशु–पक्षी के जामें में नहीं कर सकते वह है परमात्मा की भक्ति, परमात्मा के साथ मिलाप।

फिर आप कहते हैं कि आप किसी कुंजी वाले महात्मा से मिलें उसकी शरण में बैठें। परमात्मा हमें अपने भवनों में से बाहर निकालकर अंदर कठोर ताले लगाकर बैठ गया है। इस चाबी को परमात्मा, महात्मा के रूप में लेकर संसार में आता है, हमेशा ही चाबी वाले महात्मा आते रहे हैं। संसार कभी भी चाबी वाले महात्मा के बिना सूना नहीं रहता।

जो समाज मन के पीछे लगकर यह कहते हैं कि अब चाबी वाला कोई महात्मा संसार में आ ही नहीं सकता या है ही नहीं या हमें उसके चरणों में जाने की जरूरत ही नहीं। यह एक सच्चाई है कि उन कौमों में परमात्मा ने अपने मिलने का शौक, विरह, तड़प पैदा नहीं की हाँलाकि उनके धर्मग्रन्थों में स्पष्ट लिखा हुआ है कि जिस परमात्मा ने यह देह बनाई है, उसने अपने

मिलने का रास्ता भी खुद ही बनाया है। वह रास्ता किसी इंसान का बनाया हुआ नहीं, कोई उसमें कमी या ज्यादती नहीं कर सकता। वह उतना ही पुराना है जितना इंसान पुराना है। आप प्यार से कहते हैंः

जिस का गृह तिन दीआ ताला कुंजी गुर सौंपाई

जिस परमात्मा ने ताला लगाया है अगर वह मेहर करे तो हमें चाबी वाले महात्मा के पास भेजे। हम परमात्मा की खोज करने के लिए घर–बार का त्याग कर देते हैं, पुत्र–पुत्री का त्याग भी कर देते हैं, कान फड़वाकर कुंडल भी पहन लेते हैं, सिर पर बहुत भारी जटा भी रख लेते हैं। सफेद कपड़े उतारकर भगवे कपड़े पहन लेते हैं। अपना कमाया छोड़कर दूसरे की कमाई पर निर्भर हो जाते हैं। हम यह सब कुछ परमात्मा से मिलने के लिए ही करते हैं लेकिन जब हम किसी चाबी वाले महात्मा के पास जाते हैं तो वह प्यार से कहते हैं, ''तुझे कोई शान्ति आई, कुछ मिला?'' वे कहते हैं, ''हाँ जी, मुझे बहुत समय हो गया लेकिन मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ा।''

वहाँ एक अखाड़ा दूसरे अखाड़े से ईर्ष्या करता है। वे लोगों को एकता का उपदेश करते हैं और कहते हैं कि परमात्मा से मिलें, नाम जपें लेकिन उन्हें खुद परमात्मा के मुत्तलिक ज्ञान नहीं, वे खुद परमात्मा से दूर हैं। लोगों से कहते हैं कि तुम भूखे हो खाना बनाकर खाओ लेकिन अपने पेट के लिए उन्हें पता ही नहीं कि हम भी भूखे हैं।

पिछले दिनों गंगानगर में नौ कुंडी महायज्ञ हुआ। वहाँ करोड़ो से भी ज्यादा पैसा इकट्ठा किया गया। वे लोग मुझे भी लेने कि आपके इलाके में यज्ञ हो रहा है, आप भी इसमें शामिल हों। मैंने उनसे प्यार से पूछा, ''क्या मिलेगा?'' उन्होंने कहा, ''स्वर्ग मिलेगा।'' मैंने उनसे पूछा, ''कब मिलेगा?'' उन्होंने कहा, ''आगे जाकर मिलेगा।'' मैंने कहा, ''मुझे क्या पता मैं आगे कहाँ जाऊँगा? मुझे स्वर्गों की जरूरत नहीं।''

उन्होंने कहा, ''आपको पता ही है कि हिन्दुस्तान में एक समाज दूसरे समाज के खिलाफ बोल रहा है, हम एकता का यज्ञ कर रहे हैं।'' मैंने हँसकर कहा, ''अगर हम फिर मिले तो बात करेंगे, आप लोग वहाँ इकट्ठे होंगे अगर वहाँ आपकी एकता रह जाए तो मैं धन्यवाद करूंगा।'' हिन्दुस्तान काफी बड़ा है उसमें हमारे भी कई भटके हुए प्रेमी शामिल थे जिन्होंने उस यज्ञ में कई लाख रूपये लगाए।

मैं बाहर अपने खेत में कारोबार करवा रहा था, वे लोग मेरे पास आए कि हम सिर्फ आपको यह बताने के लिए आए हैं कि हमारा खूब झगड़ा हुआ है, हमने एक–दूसरे के सिर फाड़े हैं। मैं हँस पड़ा कि जब तुम्हारी एकता नहीं तो दुनिया की एकता क्या होगी?

सन्त कहते हैं कि परमात्मा आपके अंदर है। परमात्मा ने इंसान बनाया है परमात्मा ने न कोई हिन्दु बनाया है, न सिक्ख, न ईसाई या किसी और जाति का बनाया है। परमात्मा ने सारे ही मुल्कों की आत्माएं एक ही बनाई हैं। चाहे कोई अमेरिका या हिन्दुस्तान का रहने वाला है, सबको परमात्मा अंदर से ही मिलेगा। ऐसे चाबी वाले महात्मा इन सामाजिक भेदभाव से ऊपर होते हैं, वे सब समाजों, मुल्कों के लोगों को इकट्ठे बिठाकर कहते हैं, ''देखो प्यारेयो, हम सब परमात्मा के बच्चे हैं, आत्मा भी परमात्मा की अंश है, हम सब एक ही हैं। आप अंदर जाकर उस ताकत के साथ जुड़ें।''

महात्मा जीवों को सच्ची एकता सिखाने के लिए आते हैं। महात्मा कभी भी हमारे हाथ में डंडे देकर लड़वाने के लिए नहीं आते। वे हमें यहाँ से आजाद करते हैं कि आप छोटे–छोटे दायरे बनाकर क्यों लड़ते हैं।

होइ इकत्र मिलो मेरे भाई दुबिधा दूर करो लिव लाइ
हर नामै के होवो जोड़ी गुरमुख बैसो सफा विछाइ

सब लोग मिलकर परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा एक है उससे मिलने का साधन और तरीका एक है तो झगड़ा किस बात का है?

गुरु गुरु गुर करि मन मोर, गुरु बिना मै नाही होर।।
गुर की टेक रहहु दिनु राति, जा की कोइ न मेटै दाति।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि ऐसा नहीं कि हमने दिन में दो बार अभ्यास कर लिया फिर हम कहें कि हमारा पर्दा नहीं खुला। जो महात्मा सच्चखंड पहुँचे हैं यह उनका कथन है कि आप सोते–जागते गुरु–गुरु करें। हम दिन में भी साँस–साँस के साथ गुरु–गुरु करेंगे तो रात को सपने में बड़बड़ाएंगे तब मुँह से गुरु ही निकलेगा।

हम दिन में खाते–पीते, उठते–बैठते गुरु को याद करते हैं तो सिमरन का कोर्स पहले ही पूरा हो जाता है तो जब हम अभ्यास में बैठेंगे तो हमें टाँगे नहीं अकड़ानी पड़ेंगी। जब बैठेंगे तो फौरन हमारी सुरत ऊपर तीसरे तिल पर जाएगी क्योंकि हमारा ख्याल तो पहले ही एकाग्र होता है। हमें ज्यादातर सपने दिन की सोच के उलट–पुलट आते रहते हैं, सपने में भी हमें शान्ति और आराम नहीं मिलता। हम अपने आस–पास भी कईयों को बड़बड़ाते हुए देखते हैं कि मारो, पकड़ो। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिस मुख निकले नाम
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु

अगर सपने में बड़बड़ाकर जिसके मुँह से गुरु का नाम निकलता है कि हे परमेश्वर, हे सतगुरु वह मेरे तन की जूतियाँ बनाकर भी पहन ले तो मैं उसकी सेवा करके खुश होऊँगा। मिश्री का स्वाद वही बता सकता है जिसने मिश्री खाई है। गुरु की कद्र का पता सन्तों को होता है। कबीर साहब को गुरु की कद्र थी जो दिन–रात गुरु–गुरु करके गुरु ही बन गए।

आप कहते हैं कि आप सोते–जागते गुरु की शरण में रहें, गुरु ने आपको नाम की जो दात दी है उसे न आग जला सकती है, न चोर चुरा सकता है, न हवा उसे खत्म कर सकती है। हम उसे जितना मर्जी खर्च कर लें वह दात घटेगी नहीं बढ़ेगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर गुरु किसी सेवक पर दया करता है तो उसे रिद्धियाँ–सिद्धियाँ नहीं दिखानी चाहिए, अपनी कमाई कौड़ियों के भाव खराब नहीं करनी चाहिए।'' महाराज कृपाल कहा करते थे, ''कमाई वाले अभ्यासी को अपने अंदर से धुआँ तक नहीं निकलने देना चाहिए कि मैं कुछ हूँ।''

कई बार काल हमें लूटने के लिए बहुत से प्रेमियों को अंदर से प्रेरित करता है कि तुम इसकी बड़ाई करो, इसे मत्थे टेको यह बहुत अच्छा महात्मा है, भक्त है। फिर हम फूले नहीं समाते, धरती पर पैर नहीं रखते कि हम हैं कुछ। यह भी काल का, हमें लूटने का तरीका है।

गुरु परमेसरु एको जाणु।। जो तिसु भावै सो परवाणु।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपना तजुर्बा बयान करते हैं कि आप गुरु और परमेश्वर को एक समझें। यह एक सच्चाई है कि जब तक हम गुरु और परमेश्वर को बराबर खड़ा नहीं करते कि हमारे गुरु और परमात्मा में कोई फर्क नहीं तब तक हमारी सुरत अंदर नहीं जाती। अंदर बैठा शब्द–रूप गुरु दरवाजा नहीं खोलता। यहाँ आकर हम गलती कर जाते हैं क्योंकि जन्मों–जन्मों से धोखा देने वाला जानी दुश्मन मन हमारे साथ ही है।

हम यह सोचते हैं कि गुरु हमारी तरह खाना खाता है, हमारी तरह बोलता है और समाज भी रखता है, इसमें और हममें क्या फर्क है? बहुत से प्रेमी तो यह सोचते हैं कि मैं इतना पढ़ा–लिखा हूँ, यह ज्यादा पढ़ा–लिखा भी नहीं है। मुझे अच्छी तरह बोलना आता है, इसे उस तरह बोलना नहीं आता इसलिए हम उसे इंसान समझकर धोखा खा जाते हैं।

कोई पंडित काशी यूनिवर्सिटी से पढ़कर आ रहा था आगे उसे एक जमींदार मिल गया। जमींदार ने पूछा, ''तू कहाँ से आ रहा है?'' पंडित ने कहा, ''मैं काशी यूनिवर्सिटी पास करके आ रहा हूँ।'' जमींदार ने पूछा, ''क्या तुझे ससी–पुन्नू के बारे में पता है।'' पंडित ने कहा, ''नहीं।'' जमींदार ने फिर पूछा, ''सोहनी–महिवाल के बारे में पता है?'' पंडित ने कहा, ''मुझे पता नहीं।'' जमींदार ने कहा, ''फिर तू क्या पढ़ा हुआ है?'' ये छोटी–छोटी बातें हैं ये किसी खास किताब के नुख्से नहीं। जमींदार ने कहा कि तू इतने साल खराब करके आया है, यही हमारी हालत है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमें परमार्थ में आकर चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। एम.ए. पास को भी अनपढ़ों की लाईन में बैठना पड़ता है।'' मनमुख और गुरुमुख का मेल नहीं होता, जिस तरह पानी और तेल का मेल नहीं होता। एक पिता के दो बेटे स्कूल जाते हैं एक पास हो जाता है और दूसरा फेल हो जाता है। इसी तरह इंसान, इंसान में बहुत फर्क है। एक बंदा भगवान बन जाता है एक में बंदे

वाले गुण भी नहीं होते। एक खुद तरा हुआ होता है जो उसकी सोहबत में आते हैं वह उन्हें भी तार देता है। दूसरा उसी बाप का बेटा विषय–विकारों में डूबा हुआ है, जुए–शराबों में फँसा हुआ है जो उसकी सोहबत करता है वह उसे भी डुबो देता है।

हमारा मन हमें धोखा देता है कि यह हमारी तरह इंसान है लेकिन इंसान, इंसान में बहुत फर्क होता है। अनपढ़ भी इंसानों वाली शक्ल रखता है और पढ़ा–लिखा भी इंसानों वाली शक्ल रखता है लेकिन दोनों में जमीन–आसमान का फर्क है। इसी तरह जज भी इंसान की शक्ल रखता है और जो मुलजिम उसके आगे खड़ा है वह भी इंसान ही है। मुलजिम जज के आगे हाथ जोड़कर खड़ा होता है कि पता नहीं यह कितनी सख्त सजा सुनाएगा, जज के हाथ में है कि वह मुलजिम को मुक्त भी कर सकता है।

गुर चरणी जा का मनु लागै।। दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै।।

अब आप कहते हैं कि सोते–जागते जिनका मन गुरु के चरणों में लगा हुआ है दुख–दर्द उनके नजदीक नहीं आते। हमें जन्म–मरण का दुख है। जब मौत आती है तो भयानक पीड़ा होती है, जब पैदाईश होती है उस समय भी बड़ी दर्द भरी, तरस वाली हालत होती है।

हर महात्मा ने गुरु चरणों की महिमा की है। हम देह स्वरूप के बाहरी चरणों को भी नमस्कार करते हैं अगर हमें उनके बाहरी चरण न मिलते वे देह धारण करके हमारे सामने नहीं आते तो हम अंदर जा ही नहीं सकते थे, अंदर के चरणों तक पहुँच ही नहीं सकते। तुलसी साहब कहते हैंः

छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहौ
तन मन दर्पन माँज सुरति से गहौ
लगन लगै लख सार तब पाइया
अरे हाँ रे तुलसी सन्त चरन की धूर नूर दर्साइया

गुरु साहब कहते हैं जब अभ्यासी सिमरन करके आँखों के पीछे आता है, सूरज–चाँद, सितारे पार करके गुरु स्वरूप तक पहुँचता है तो आगे गुरु का नूरी स्वरूप अति प्रकाशमान है, गुरु प्रकट हो जाते हैं। महात्मा उन चरणों की महिमा करते हैं कि वहाँ पहुँचें। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

माई चरण गुरु मीठे
गुरु चरण मेरे गृह आए सुत्ते दिए भाग जगाए

गुरु के चरण मीठे और प्यारे हैं। मेरे प्यारे गुरुदेव के जीवनकाल की एक छोटी सी कहानी है। हम दोनों खेत में बराबर चल रहे थे वहाँ कुछ रेत वाली जमीन थी। मैंने उस वक्त से फायदा उठाया मैं बातें भी कर रहा था और मैंने चुपके से उनके पैर का रेत उठा लिया। कई बार हमारा मन चतुराई भी करता है कि इन्हें पता न लग जाए लेकिन वे जानी जान थे। वे कहने लगे, ''मैं इन बातों से खुश नहीं, अब तू रोज इसे माथा टेका करेगा, इसे संभालकर डिब्बी में रखेगा।'' मुझे पहले से ही थोड़ी बहुत कविता बोलने की आदत थी मैंने हँसकर कहाः

तेरी सजरी पैड़ दा रेता चुक चुक लालां हिक्क नूं
प्यारेया ओए तेरे पंज शब्दां ने मैंनू तारया

यह सच है कि वह रेत मैंने संभालकर रखा हुआ है। जिस चादर पर महाराज सावन सिंह जी किसी समय अपनी मुबारक पवित्र देह लेकर बैठे थे, जब महाराज कृपाल आए तो वे भी उस चादर को भाग लगा गए। मैंने वह चादर संभालकर रखी हुई है।

गुर की सेवा पाए मानु।। गुर ऊपरि सदा कुरबानु।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि दरगाह में उसे मान मिलता है जो गुरु की सेवा में लग जाता है। सेवा वही कर सकता है जिसके ऊपर परमात्मा दयाल हो, जिसे बख्शना चाहता हो। गुरु साहब कहते हैंः

सतगुरु की सेवा सफल है जे को करे चित्त लाइ

अगर दुनिया में कोई सेवा सफल है तो वह सतगुरु की सेवा है। स्वामी जी महाराज ने और सारे ही सन्तों ने सेवा के मुत्तलिक बहुत कुछ लिखा है। महाराज जी इसके मुत्तलिक समझाते रहे कि सेवा चार प्रकार की है। सुरत–शब्द, तन, मन और धन की सेवा है।

सन्त–सतगुरु को हमारे तन, मन और धन की जरूरत नहीं है लेकिन जब तक सेवक ये सारी मश्क पूरी नहीं कर लेता उसका तन पवित्र नहीं होता। तन से हम साध–संगत का इंतजाम करते हैं। लंगर की सेवा करना तन की सेवा है। गुरु का दिया हुआ सिमरन करना मन की सेवा है। अंदर सुरत को शब्द के साथ जोड़कर रखना सुरत–शब्द की सेवा है। अगर परमात्मा हमारे ऊपर मेहर करता है तो हम धन में से कुछ हिस्सा गुरु की सेवा में खर्च कर देते हैं। गुरु हमारे तन और धन का भूखा नहीं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

गुरु नहिं भूखा तेरे धन का, उन पै धन है भक्ति नाम का
पर तेरा उपकार करावें, भूखे प्यासे को दिलवावें
उनकी मेहर मुफ्त तू पावे जो उनको प्रसन्न करावे

गुर का दरसनु देखि निहाल।। गुरु के सेवक की पूरन घाल।।
गुर के सेवक कउ दुखु न विआपै।। गुर का सेवकु दह दिसि जापै।।
गुर की महिमा कथनु न जाइ।। पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ।।
कहु नानक जा के पूरे भाग।। गुर चरणी ता का मनु लाग।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में गुरु की महिमा के बारे में, **गुरु के प्यार** के बारे में अच्छी तरह से समझाया है। आखिर वे एक ही नसीहत करते हैं कि गुरु के चरणों में, गुरु की संगत में उनका प्यार लगता है जिनके जन्मों–जन्मों के सोए हुए भाग्य जाग जाते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नानक भाग भले तिस जन के जो हरि चरणी चित्त लावै।। ***

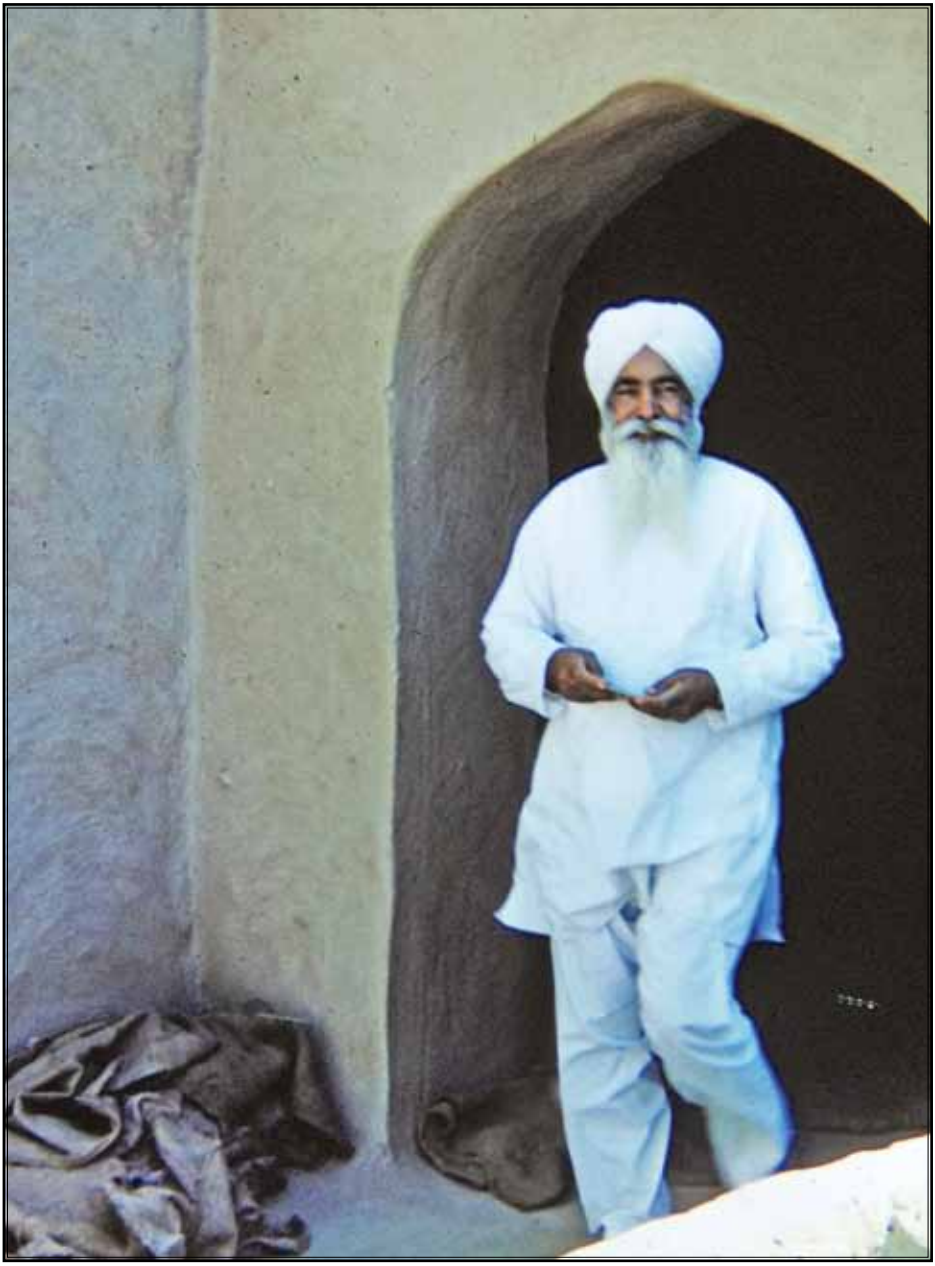

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

29 सितम्बर 1985 16 पी.एस. आश्रम(राजस्थान)

एक प्रेमी: *– सन्त अक्सर निन्दा करने के लिए मना करते हैं लेकिन मैं फिर भी निन्दा के बारे में पूछने के लिए आपसे माफी चाहूँगा। कुछ समय से मैं ज्यादा सावधान होता जा रहा हूँ कि निन्दा का क्या मतलब है? कभी–कभी लोग हमारे पास आते हैं और वे अपनी जिंदगी के बारे में शिकायत करते हैं कि उनके साथ जो अन्याय हुआ है उसके बारे में बताते हैं। हम सहानुभूति से उनकी बात सुनते हैं क्योंकि उन्हें मदद की जरूरत होती है। ऐसा करना कहाँ तक निन्दा कहलाता है, क्या हमें ऐसी बातें सुननी चाहिए या किसी तरह उनसे बचना चाहिए?*

बाबा जी: – परमात्मा कृपाल कहा करते थे कि किसी की निन्दा करना या सुनना भी पाप है। अगर आपको किसी की निन्दा सुननी पड़े तो उस समय आपको बहुत सावधान रहना चाहिए कि जिस इंसान का जिक्र हो रहा है, उसके बारे में आपके मन में कोई अभाव न आए। आप उसकी मदद तभी कर सकेंगे कि जिसकी बात हो रही है आप उसकी निन्दा में भाग नहीं लेंगे। आपको उसकी बात ध्यान और सब्र से सुननी चाहिए और आखिर में उसे सलाह देनी चाहिए, ''प्यारेया, तेरे साथ जो हुआ है उसे भूल जा।'' आप अपने दिल में किसी के बारे में कोई अभाव न लाएं।

एक प्रेमी: *– हमें कैसे पता चलेगा कि हम पुराने कर्मों का भुगतान कर रहे हैं या नये कर्म बना रहे हैं? नामलेवा और बेनामलेवा में क्या फर्क है? भजन–अभ्यास करते हुए शारीरिक और मानसिक कष्ट हो तो क्या उस वक्त हम कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं या सही तरीके से अभ्यास नहीं कर रहे होते?*

बाबा जीः – सतसंगी और गैरसतसंगी की जिंदगी में अंतर होता है। सतसंगी को गुरु का सतसंग सुनकर समझ आती है कि हम जो भुगत रहे हैं ये हमारे खुद के कर्मों का फल है, चाहे वे कर्म इस जन्म के हैं या पिछले जन्म के। ज्यादातर सतसंगी इसी जन्म के किए हुए कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं लेकिन भुगतान करते हुए उन्हें गुरु की मुनासिब मदद भी मिलती रहती है।

गैरसतसंगी लोगों का कोई गुरु नहीं होता और वे यह भी नहीं सोच पाते कि वे इस जन्म के कर्मों का भुगतान कर रहे हैं या पिछले जन्मों के कर्मों का भुगतान कर रहे हैं। वे नये कर्म बनाते जाते हैं और पुराने कर्मों की सजा का भुगतान भी करते रहते हैं। सब लोग एक जैसे कर्म नहीं करते इसलिए उनका भुगतान भी एक जैसा नहीं होता। सतसंगी को हमेशा ही मुनासिब मदद मिलती है क्योंकि गुरु इसी जन्म में उसके सारे कर्मों का भुगतान करवाना चाहते हैं ताकि वे वापिस अपने घर सच्चखंड जा सके।

पंजाब में एक बहुत खूबसूरत और होशियार आदमी था। मैं उसे तब से देख रहा था जब मैं बच्चा था। मालिक की मौज उसका शरीर इस तरह सिकुड़ गया जैसे वह आग में गिर गया हो। मैं अक्सर उसे देखने जाया करता था इसलिए मुझे उस पर तरस आया और मैंने उससे कहा, ''परमात्मा ने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया है, तुम बहुत अच्छे इंसान हो फिर भी तुम्हें इतना कष्ट सहन करना पड़ रहा है।''

उसने कहा, ''ऐसा न कहें, इसमें किसी की गलती नहीं मेरी ही गलती है। मैं जानता हूँ कि मैंने इस जन्म में कैसे कर्म किए हैं?'' उसने मुझे अपनी जिंदगी की ऐसी बहुत सी घटनाएं बताई जो वह किया करता था। उसने बताया कि मैं मुर्गियों के गले काटकर उन्हें जिन्दा जलाया करता था। एक बार मैं हिरन का शिकार कर रहा था, हिरनी और उसका बच्चा वहीं बैठे थे, मैंने उन्हें बड़ी बेरहमी से मार दिया।

मैंने इस जन्म में जैसे कर्म किए हैं मैं उन्हीं कर्मों की सजा भुगत रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मैंने पिछले जन्मों में कैसे कर्म किए हैं लेकिन मैंने इस जन्म में जो कर्म किए हैं, परमात्मा मुझे उनकी सजा दे रहा है, मैं इसी लायक हूँ। जो समझदार हैं वे समझ सकते हैं कि हम अपने कर्मों का भुगतान कर रहे हैं।

मेरा एक रिश्तेदार पुलिस में था, वह रिश्वत लिया करता था। एक बार कोई उसके पिता को साथ लेकर गया कि शायद वह अपने पिता की बात सुनेगा और रिश्वत नहीं माँगेगा। उसने अपने पिता का मान भी नहीं रखा और उसने कहा, ''पैसा ही मेरा पिता है।'' उसने अपनी सारी जिंदगी रिश्वत लेने में गुजार दी और रिश्वत से बहुत पैसे बना लिए।

पिछले साल की बात है कि मरने से एक महीना पहले उसे दिखाई देने लगा कि उसके गले में जूतों का हार पहनाकर, गधे पर बिठाकर उसे सारे शहर में घुमाया जा रहा है। उसकी बहुत निन्दा हो रही है और उसे यह दृश्य भी दिखाई देने लगा कि उसके साथ काम करने वालों ने बहुत सादा और पवित्र जीवन जिया था, वे रिश्वत नहीं लेते थे। वे कारों में घूम रहे हैं और अच्छी जिंदगी जी रहे हैं।

उसे अक्सर ऐसे दृश्य दिखाई देते तो अहसास हुआ कि रिश्वत लेने की बुरी आदत की वजह से उसे इस सजा का भुगतान करना पड़ेगा। वह मेरे पास आया और उसने अपनी आप बीती सुनाई। मैंने उससे कहा, ''अब तुम्हें अहसास हो गया है कि तुमने जिदंगी में जो बुरे कर्म किए हैं परमात्मा की अदालत में तुम्हें उनका भुगतान करना होगा।'' कुछ समय बाद उसने शरीर छोड़ दिया।

महाराज सावन सिंह जी एक पुलिस अफसर के बारे में बताया करते थे जो गायों के चारे का इन्चार्ज था। वह उस चारे में से पैसे अपने पास रख लेता और रिश्वत भी लिया करता था। उस अफसर ने शरीर छोड़ने

से पहले अपनी पत्नी को बताना शुरु किया, ''यमराज आया है और गायें मुझे मार रही हैं।'' उसी दर्द भरी हालत में उसने शरीर छोड़ दिया। जिसने इस जन्म में जैसे कर्म किए हैं उसे उनका भुगतान करना पड़ेगा। हम ऐसे किसी कर्म का भुगतान नहीं करते जो हमने न किया हो। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

जो जो किया सो भोगना भरना

जब सतगुरु हमें नामदान के लिए चुनते हैं, तब वे कोई गलती नहीं करते। गुरु जानते हैं कि हमने कितने कर्मों का भुगतान काल को देना है और उसमें से गुरु को कितना चुकाना है। गुरु हमारे कर्मों के बारे में सब जानते हैं। हम जन्मों–जन्मों से जो संचित कर्म इकट्ठे करते चले आ रहे हैं, सतगुरु दया करके हमारे सारे संचित कर्मों को समाप्त कर देते हैं।

गुरु हमें क्रियामान कर्मों के बारे में बताते हैं कि हमें निस्वार्थ कर्म करने चाहिए ताकि हमें उन कर्मों के फलस्वरूप फिर सुख–दुख को भोगने के लिए इस संसार में न आना पड़े। सतगुरु, प्रालब्ध कर्मों को नहीं छेड़ते। गुरु हमें बताते हैं कि हमें किसी भी हालत में प्रालब्ध कर्मों के सुख–दुख भोगने पड़ेंगे लेकिन उसमें भी गुरु प्यार से हमारी मदद करते हैं।

प्रेमियों के पत्र पढ़कर पता लगता है कि गुरु उनकी कितनी मदद करते हैं। जो प्रेमी भजन करते हैं अंदर जाते हैं वे जब बीमार होते हैं या उन्हें अपने कर्मों की सजा का भुगतान करना पड़ता है तो वे हमेशा गुरु से विनती करते हैं, ''सतगुरु, आप मेरे दुख मत उठाना।'' वे जानते हैं कि गुरु को कितना भुगतान करना पड़ेगा। जो भजन नहीं करते, अंदर नहीं जाते, उन्हें जब कोई तकलीफ आती है या दर्द होता है तो वे तुरंत ही गुरु से विनती करते हैं, ''सतगुरु, आप मेरी मदद करें।'' अगर हम पेड़ की सेवा करते हैं तो उस पेड़ पर फल लगते हैं। हम जिस गुरु की सेवा कर रहे हैं क्या वे मुश्किल के समय हमारी रक्षा नहीं करेंगे?

अब, दूसरा सवाल भजन–अभ्यास के दौरान होने वाले दर्द के बारे में है। आमतौर पर हमें भजन–अभ्यास में दर्द तभी होता है जब हम रोजाना भजन–अभ्यास नहीं करते। जो काम हम रोज करते हैं उसमें हमें महारत हासिल हो जाती है। भजन के दौरान दर्द तभी होता है जब हम कुछ दिन अभ्यास करते हैं फिर छोड़ देते हैं अगर हम रोज अभ्यास करें तो अभ्यास के दौरान हमें जो दर्द महसूस होता है, वह अपने आप ही चला जाएगा।

एक प्रेमी:– *परिवार में बच्चों के सामने भजन में बैठने के बारे में आप कुछ बताएं?*

बाबा जी:– आप परिवार के साथ भजन में बैठ सकते हैं लेकिन आपको अपना मुँह ढक लेना चाहिए ताकि किसी को पता न चले कि आप क्या कर रहे हैं। बच्चे भोली आत्माएं होती हैं वे जब आपको भजन में बैठे हुए देखते हैं तो वे आपकी नकल करने की कोशिश करते हैं। बच्चे भोले होते हैं उनका दुनिया में ज्यादा फैलाव नहीं होता, उनका ध्यान सीधा ऊपर चला जाता है और वे अंदरूनी नजारे देखने लग जाते हैं।

केलिर्फोनिया में मैंने एक बच्चे को भजन पर बिठाया, जब उसने अपने कान बंद किए तो उसे आवाज सुनाई देने लगी। वह आवाज इतनी तेज थी कि बच्चा उस आवाज को सहन नहीं कर सका और रोने लगा। उस समय मैंने पप्पू से कहा कि उस बच्चे की अंगुलियाँ कान से निकाल दे। जैसे ही बच्चे के कान से अंगुलियाँ निकाली, वह चुप हो गया और समझ नहीं पाया कि क्या हुआ था।

एक प्रेमी: *– हमने सुना है अगर हम पाँच डाकुओं के प्रभाव में हैं तो परमात्मा हमारे लिए दरवाजा नहीं खोलता। हमने यह भी सुना है कि जो लोग शराब और नशीली वस्तुओं का सेवन करते हैं उन्हें भी गुरु के दर्शन हुए हैं और जो नामलेवा नहीं उनको भी गुरु के दर्शन हुए हैं। क्या आप हमें गुरु की दया के बारे में कुछ बताएंगे?*

बाबा जी: – यह एक बहुत गहरा राज़ है आपको इसे समझने की कोशिश करनी चाहिए। वास्तव में अंदर जाकर ही आप इसे अच्छी तरह समझ सकते हैं लेकिन बाहरी तौर पर मैं आपको समझाने की कोशिश करूंगा कि यह कैसे होता है।

कुछ आत्माएं बहुत अच्छी होती हैं उन पर परमात्मा की खास दया होती है, उन्हें इस दुनिया में परमात्मा की भक्ति के लिए चुना जाता है। उन्हें अपने आस–पास की परिस्थितियों और जिन लोगों का साथ मिलता है उस वजह से वे शराब और नशीली चीजों के संपर्क में आ जाते हैं लेकिन अंदर से वे बहुत पवित्र आत्माएं होती हैं।

मैं ऐसे कई प्रेमियों से मिला हूँ जो शराब पीते हैं और बुरे कर्म करते हैं लेकिन बाद में वे इसे अच्छा महसूस नहीं करते और अपने आपको कोसते हैं। अगर आप गलती करने के बाद पछताते हैं तो यह भी मन के ऊपर जीत प्राप्त करने जैसा ही है। ऐसे लोग जब सतगुरु के पास आते हैं तो उन्हें इन सब बुरी चीजों से छुटकरा मिल जाता है। दूसरे लोग उनके बारे में बातें भी करते हैं कि ये अपनी बुरी आदतें कैसे छोड़ पाएगा? ऐसे प्रेमी गुरु के दर्शन करने के बाद उन आदतों को छोड़ देते हैं। दूसरे लोगों से भी ज्यादा भजन करते हैं और गुरु के पूर्ण शिष्य बन जाते हैं।

सन्त ही सन्तों की दया को समझते हैं, दूसरे लोग समझ नहीं सकते कि गुरु की दया कैसे काम करती है। जब सतगुरु ने किसी को मुक्त करना होता है तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कहाँ और किस हालात में रहता है। गुरु खुद वहाँ जाते हैं, कभी स्वपन में या कभी खुद उसके सामने प्रकट हो जाते हैं, यह मायने नहीं रखता कि वह इंसान क्या कर रहा है अगर गुरु ने उस आत्मा को मुक्ति दिलाने का फैसला कर लिया है तो गुरु उस आत्मा को मुक्ति दिलाने के लिए सब कुछ करता है।

मैंने कई बार हरनाम सिंह की कहानी बताई है, वह मेरे पिछले गाँव में रहता था और यह कहानी सन्त बानी मैगजीन में भी छप चुकी है। मेरे पिछले गाँव से अबोहर शहर पचास मील की दूरी पर है।

एक बार हरनाम सिंह अबोहर गया, उस समय महाराज कृपाल कार में दिल्ली से अबोहर आ रहे थे। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उसे चलती हुई कार में महाराज जी के कितने दर्शन हुए होंगे? वह महाराज जी की आँखों में खो गया और उसके अंदर अजीब किस्म की जागरूकता हो गई। महाराज जी के दर्शन करने से पहले हरनाम सिंह शराब और बीड़ी पीता था और हर किस्म के बुरे काम करता था लेकिन महाराज जी के दर्शनों के बाद उसने सब बुरी आदतें छोड़ने का फैसला कर लिया।

जब वह अबोहर से गाँव वापिस आया तो उसने मुझसे कहा कि आप हमेशा रूहानी बातें करते हैं, मैं आपको बताता हूँ कि आज मैंने एक महान रूहानी शख्सियत के दर्शन किए हैं। मैं नहीं जानता कि वह कौन हैं, उन्होंने सफेद कपड़े पहने हुए थे, उनकी दाढ़ी सफेद थी वह बहुत पवित्र शख्सियत थे। मैं उन आँखों को कभी नहीं भूल सकता, मुझे अभी भी उनका रूहानी स्वरूप याद है। मैंने तय किया है कि अब मैं सारी बुरी आदतें छोड़ दूँगा। मैं उसकी यह बात सुनकर बहुत हैरान हुआ क्योंकि उसका पिछला जीवन अच्छा नहीं था।

उस दिन के बाद हरनाम सिंह एक साल तक जीवित रहा, उसने कभी शराब को हाथ नहीं लगाया और सारी बुरी आदतें छोड़कर एक अच्छा इंसान बन गया। महाराज जी ने उसे कोई थ्योरी नहीं समझाई कि तुम्हें शराब, बीड़ी छोड़ देनी चाहिए। यह महाराज जी की दया ही थी जिसने उसके अंदर ऐसी जागरूकता पैदा की कि बिना कहे ही उसने सब बुराईयाँ छोड़ दी। उसे नामदान नहीं मिला था लेकिन उसे गुरु का स्वरूप याद था और वह कभी भी महाराज जी की आँखों को नहीं भूला।

एक साल बाद हरनाम सिंह और चालीस मजदूर मेरे खेत में फसल की कटाई कर रहे थे। उसके लड़के ने मेरे पास आकर कहा, ''पता नहीं मेरे पिता को क्या हुआ है?'' मैं वहाँ गया और मैंने हरनाम सिंह से पूछा, ''तुम्हें क्या हुआ है?'' उसने कहा, ''मुझे कुछ नहीं हुआ लेकिन अब मैं जा रहा हूँ। मैंने जिस शख्सियत को एक साल पहले देखा था, वे हवाई जहाज में आए हैं उन्होंने सफेद कपड़े पहने हुए हैं और अब मेरी आत्मा को सच्चखंड ले जा रहे हैं। वह एक साल बाद यहाँ आएंगे आपको उनके सत्कार के लिए तैयारी करनी चाहिए, वह आपके लिए सब कुछ करेंगे।'' इतना कहकर उसने शरीर छोड़ दिया।

आप देखें, सतगुरु की दया कैसे काम करती है। हरनाम सिंह को नामदान नहीं मिला था। उसने कभी महाराज कृपाल के बारे में नहीं सुना था और न ही उसे सन्तमत की थ्योरी के बारे में कुछ पता था। उसको किसी ने नहीं समझाया था कि शराब छोड़ देनी चाहिए, बीड़ी पीना और बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिए। यह गुरु की दया थी कि सिर्फ दर्शन करने से उसको जागरूकता प्राप्त हुई और उसकी जिंदगी बदल गई।

ऐसी आत्माएं, जिन्हें परमात्मा ने चुना है उनकी मुक्ति के लिए गुरु हमेशा कोई न कोई जरिया बनाता है और उन आत्माओं को मुक्ति प्रदान करता है। गुरु के तरीकों पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। सिर्फ गुरु ही जानते हैं कि वे कैसे अपने प्यारों पर दया बरसाते हैं।

आप जानते हैं कि मैं कितना सफर करता हूँ, मैं दिल्ली जाता हूँ, मैं हवाई जहाज में कितनी सारी जगह जाता हूँ। मैं कई दफा ऐसे इंसानों से मिलता हूँ, मुझे लगता है कि वे मेरी ही इंतजार कर रहे हैं और वे जैसे ही मुझे देखते हैं, हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं अगर मैं उनकी तरफ ध्यान लगाऊं तो भी वे मेरी तरफ नहीं देखते। यह सब उस परमात्मा की दया पर निर्भर करता है। कुछ लोग जो मेरी तरफ

आदर की निगाह से देखते हैं उन्हें परमात्मा ने चुना है और परमात्मा ने उन पर बहुत दया की है। दूसरे लोग जिनकी तरफ मैं देखने की कोशिश करता हूँ या उन्हें दर्शन देने की कोशिश करता हूँ फिर भी वे मेरी तरफ नहीं देखना चाहते क्योंकि वे इतने भाग्यशाली नहीं होते कि उनको किसी सन्त के दर्शन प्राप्त हो सकें। यह सब नसीब पर निर्भर करता है।

मैं कई बार आर्मी के बारे में बताया करता हूँ कि आर्मी में पहले ट्रेनिंग लेनी पड़ती है अगर ट्रेनिंग के दौरान कोई गलती हो जाती है तो उसे माफी मिलती है। जब ट्रेनिंग पूरी हो जाती है फिर उससे कोई गलती होती है तो उसे माफी नहीं मिलती। जब गुरु नामदान देते हैं तो वे हमें प्यार से समझाते हैं , ''हमें क्या करना है और क्या नहीं करना? हमें शराब नहीं पीनी चाहिए, मीट नहीं खाना चाहिए, किसी की चीज नहीं चुरानी चाहिए और हमें बहुत अच्छा जीवन जीना चाहिए।'' सब नियम–कानून जानने के बाद अगर हम कोई गलती करते हैं तो हमें सजा जरूर मिलेगी।

गैर सतसंगियों को कोई समझाने वाला नहीं होता, उन्हें अच्छे और बुरे के बारे में पता नहीं होता। वे जब कोई गलती करते हैं और सच्चे दिल से माफी माँगते हैं तो उन्हें माफी मिल सकती है क्योंकि उन्हें पता नहीं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है? जिस आदमी को कानून का पता है अगर वह गलती करे तो उसे दूसरों की तुलना में ज्यादा सजा मिलती है।

मैं आशा करता हूँ कि आपको समझ आ गया होगा कि मैंने क्या कहने की कोशिश की है। यह सवाल बहुत ही दिलचस्प था और इसे मैं ज्यादा लम्बा करके समझा सकता था लेकिन इसे मैं यहीं समाप्त करता हूँ।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि हम सतगुरु के पहलवान हैं, सतगुरु से नामदान लेकर हमें पाँच डाकुओं के पंजे में नहीं आना चाहिए। हमें कोई गलती नहीं करनी चाहिए, सच्चे दिल से पूरी लगन से सतगुरु की भक्ति करनी चाहिए और अपने आपको पवित्र बनाना चाहिए। ***

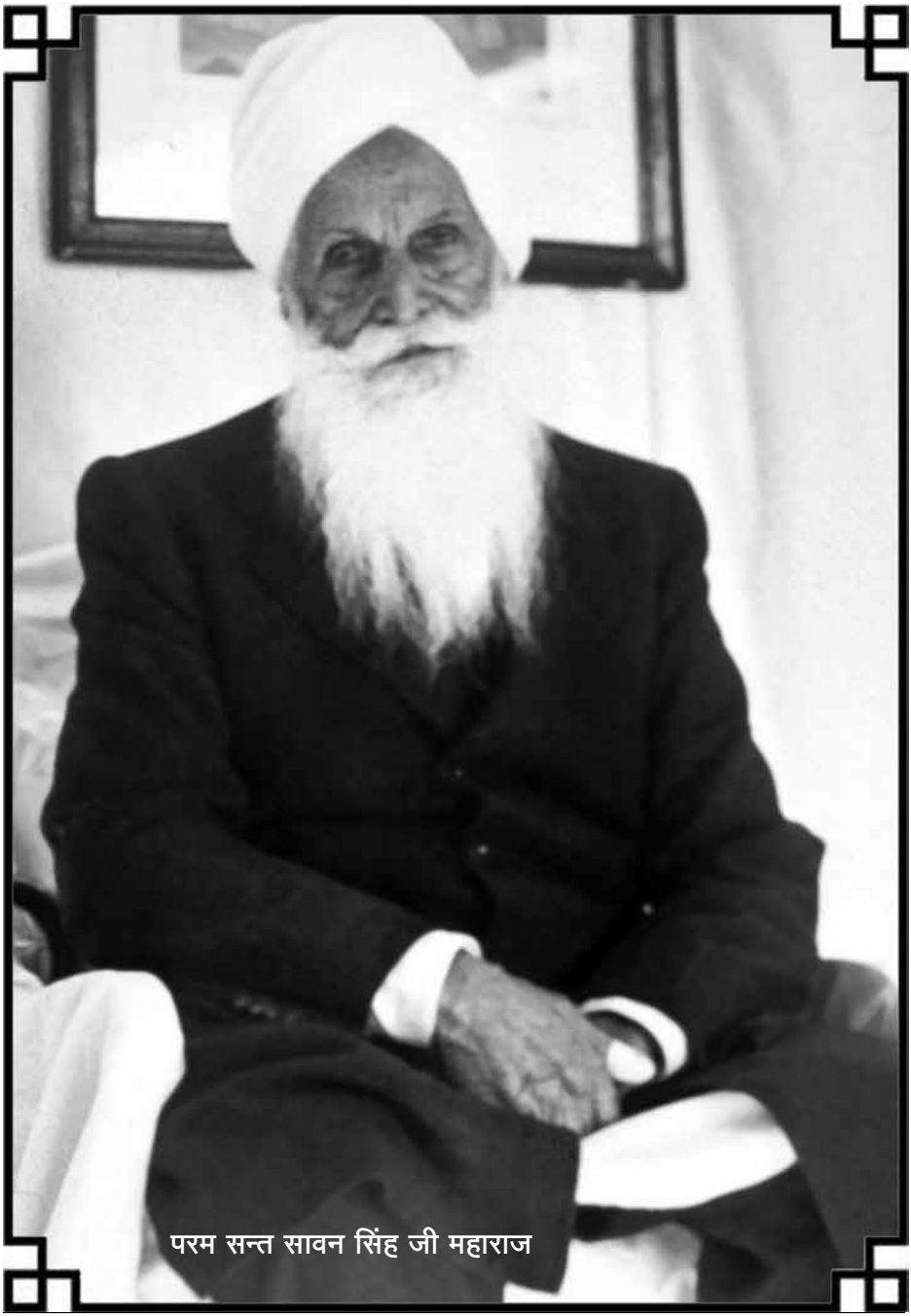

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज

अपने मन पर विजय प्राप्त करें

बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा एक श्रद्धालु सतसंगन को लिखा पत्र

1 अगस्त 1912

मेरी प्यारी बेटी,

तुम्हारा प्यार और श्रद्धा भरा खत मिला। नए मकान में स्थानांतरण करने की वजह से तुम्हारे भजन–अभ्यास पर असर पड़ा, इसके बावजूद तुम अंदर अच्छी प्रगति कर रही हो यह जानकर बड़ी खुशी हुई। तुम्हें परमपिता परमात्मा की दया से आरामदायक घर मिल गया है और तुम्हारी दुनियावी चिन्ता खत्म हो गई है। अब तुम्हें परमपिता परमात्मा की उपासना में जी–जान से जुड़ जाना चाहिए। अपने कारोबार में से जितना समय आसानी से निकाल सको उतना समय भजन–अभ्यास के लिए देना चाहिए लेकिन ख्याल रहे कि तुम्हारे कारोबार पर इसका असर न पड़े।

इस दुनिया के सारे ऐशो–आराम स्वयं दुनिया सूरज, चाँद, सितारे हम जो कुछ भी देख रहे हैं ये सब नाशवान हैं, सिर्फ आत्मा अमर है। यह छोटी सी जिंदगी इस तरीके से जिओ जिससे परमात्मा खुश हो जाए। तुम्हारा इस दुनिया में आवागमन खत्म हो जाए और तुम्हें तुम्हारा अविनाशी घर सच्चखंड मिल जाए, जहाँ सिर्फ निर्मल आनन्द है।

अभ्यास में बैठने के बारे में तुमने लिखा है कि तुम एक ही आसन में ज्यादा देर नहीं बैठ सकती तो तकिए का इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नहीं। तुम सस्मास से कहकर अपने लिए एक बैरागन बनवा लो। बैरागन एक तरह का लकड़ी का सीधा टुकड़ा होता है जिसमें एक और छोटा लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है तो 'T' आकार की बैरागन बन जाती है। इसकी लंबाई में डेढ़ फुट और चौड़ाई में दो इंच का लकड़ी का टुकड़ा

इस्तेमाल होता है और उसके ऊपर की चोटी पर बीचो–बीच छोटी लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है, जिससे दोनों कुहनियों को अभ्यास करते समय आधार मिलता है। हम अपना ज्यादातर समय दुनियावी बातों में बिताते हैं और ध्यान में कुछ ही घंटे बिताते हैं। हमारी आत्मा उस पवित्र शब्द की आवाज का रस ठीक से नहीं ले पाती। हमारा मन बार–बार बाहर जाता है और दुनियावी चीजों के बारे में सोचता रहता है इसलिए सारे दिन के कामकाज पर तीक्ष्ण नजर रखें और ध्यान रखें कि मन तुम्हें दुनियावी चीजों में न बहा ले जाए।

दुनियावी इच्छाओं को रोकने की कोशिश करें और बाहर की तरफ ले जाने वाली इन्द्रियों पर नियंत्रण रखें। हमेशा अपना ध्यान केन्द्रित करें और अपने मन को फालतू कल्पनाओं में न फँसने दें, यह तभी संभव होगा जब आप अपने मन को 'शब्द–नाम' के साथ जोड़े रखेंगी। हर समय चलते–फिरते, खाते–पीते या कोई भी ऐसा काम करते समय जिसमें खास ध्यान देने की जरूरत नहीं होती उस समय पवित्र नाम जपने में अपना ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करें। हमेशा सतर्क रहें, अपने ध्यान को इधर–उधर न भटकने दें, मन पर काबू पाने का यही एक तरीका है।

किसी इंसान या किसी चीज के जरिए तुम्हारे लिए जो भी अच्छा या बुरा होता है वह हमारे परमपिता की तरफ से होता है। सारे इंसान और सारी चीजें उस परमात्मा के कार्य के साधन हैं अगर तुम्हारे साथ कोई बुरी घटना घटती है तो तुम यह सोचो कि यह परमात्मा की सबसे बड़ी दया है।

हमें पिछले कर्मों का भुगतान तो करना ही पड़ता है, अभी करें या बाद में करें। हमारे सतगुरु भविष्य में होने वाले दुख और कष्ट शीघ्रता से भुगतवाना चाहते हैं और जल्दी हमारे कर्मों का बोझ हल्का करना चाहते हैं, यह तो कर्मों का कर्ज है। अगर हमने एक टन जितना भुगतान करना हो तो अब हमें एक पौन्ड जितना भुगतान करके छुटकारा मिल जाता है।

अगर तुम्हें सख्त कर्मों का भुगतान करना पड़े तो जी छोटा न करना यह तुम्हारे अच्छे के लिए ही होता है। अगर कोई आदमी आपकी गलती न होने पर भी आपके साथ बुरा सुलूक करता है तो आप उस बुरे सुलूक के पीछे सतगुरु का हाथ समझें। सतगुरु देखना चाहते हैं कि आपका अहंकार खत्म हो गया है या नहीं? वे देखना चाहते हैं कि आपके अंदर नम्रता और प्यार की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं।

सोचकर देखें, अगर इंसान अपना बेटा खो देता है ऐसा परखने के लिए होता है कि आपके दुनियावी रिश्तों का प्यार कम हुआ या नहीं? परमपिता हमें उन भारी जंजीरों से छुड़वाना चाहते हैं जो जंजीरें हमें दुनिया में जकड़कर रखती हैं। दुनियावी रिश्तेदारों से ज्यादा प्यार होने का मतलब है सतगुरु से कम प्यार।

वे सारी घटनाएं जो दुर्भाग्यपूर्ण दिखाई देती हैं वे असल में वैसी नहीं होती। वे हमें शुद्ध करने के लिए, हमारे कर्मों का बोझ हल्का करने के लिए होती हैं, हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाती हैं और हमें बेहतर इंसान बनाती हैं। हमेशा ईश्वर की इच्छा के आधीन रहें, उसकी रजा में संतोष मानें। परमपिता परमात्मा जो करते हैं, अच्छे के लिए ही करते हैं।

इस दुनिया में जो लोग अंदरूनी तरक्की करने में जुड़े हैं, उन्हें सदा मन और विषय के दो ताकतवर शत्रुओं के आक्रमण का सामना करना पड़ता है। ये हमारे मार्ग में अनेक रूकावटें पैदा करने की कोशिश करते हैं। अगर कोई प्रतिकूल या बुरी घटना घटती है तो हमें निराश नहीं होना चाहिए बल्कि हमें दोगुने प्रेम से उभरना चाहिए, अन्त में जीत हमारी होगी।

हमारे परमपिता प्यार हैं और हम उस प्यार के सागर की बूँदे हैं। इस विशाल संसार की यंत्रणा निरंतर प्यार के तत्व पर आधारित है इसलिए तुम प्यार के तत्व के अनुरूप होने का प्रयत्न करो। तुम्हारे अंदर सतगुरु का प्यार जितना गहरा होगा उतना ही दुनिया के साथ प्यार कम और

फीका रहेगा। सतगुरु का प्यार दुनियावी प्यार की जगह ले लेगा फिर आत्मा शरीर से निकलने लगेगी। एक–एक करके अंदरूनी परदे खुलने लगेंगे। संसार का गूढ़ रहस्य खुल जाएगा और तुम अपने आपको प्यारे परमपिता परमात्मा की गोद में पाओगी, उनसे एकरूप हो जाओगी।

परमपिता परमात्मा ने अपनी दया करके तुम्हें यह पवित्र दात दी है। इस दात की तुलना दुनिया के किसी भी खजाने के साथ नहीं हो सकती। अगर तुम भजन–अभ्यास नहीं करोगी तो तुम्हारी अंदरूनी प्रगति नहीं होगी। आदमी की भूख सिर्फ सामने पड़े विभिन्न पदार्थों को गिनने से नहीं मिटती। तुमने जो शिक्षा प्राप्त की है वह अनमोल है। इसका फायदा तब तक नहीं होगा जब तक तुम इसके अनुसार नहीं चलोगी, इस पर अमल नहीं करोगी। रोजाना अपने दुनियावी कामकाज से जितना ज्यादा समय भजन–अभ्यास के लिए निकाल सकती हो अवश्य निकालो।

सारांश में तुम्हें निम्नलिखित बातों का ख्याल रखना चाहिए।

1. मन के ऊपर काबू
2. विषय–विकारों से परहेज
3. परमात्मा की रजा को मानना
4. सतगुरु से प्यार
5. नित्यनियम से भजन–अभ्यास

तुम्हें ऐसे पत्र अपने मार्गदर्शन के लिए संभालकर रखने चाहिए और इन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

तुम्हारा प्यारा,

सावन सिंह

RNI No - RAJHIN/2003/9899